नकली बेदारी

ज़ैक पूनन

यीशु और प्रेरितों ने बार बार चेतावनी दी कि अंत के दिनों में धोखाधड़ी बढ़ जाएगी और कई झूठे भविष्यद्वक्ता आ खड़े होंगे (मत्ती २४:३-५,११,२४; १ तीमु. ४:१) - और अंतिम कुछ दशकों में हम ने ऐसे कई झूठे भविष्यद्वक्ताओं को देखा है। लाखों मसीही लोग इन झूठे भविष्यद्वक्ताओं से और नकली बेदारियों से क्यों ठगे जाते हैं? और क्यों कई प्रचारक अनैतिकता और लालच का शिकार बन रहे हैं?

यहां पर इसके कुछ मुख्य कारण दिए जाते हैं :

१. वर्तमान समय के अधिकतर मसीही विश्वासियों को आज नए नियम की शिक्षा का ज्ञान नहीं है क्योंकि उन्होंने उसका सावधानी के साथ अध्ययन नहीं किया है; और वे अपने अगुवों की शिक्षा का पालन करते हैं, नए नियम की शिक्षाओं का नहीं।

२. आश्चर्यकर्म (अलौकिक वरदान) उनके लिए चरित्र (अलौकिक जीवन) से ज़्यादा महत्वपूर्ण हैं।

३. आत्मिक संपत्ति से भौतिक संपत्ति ज़्यादा महत्वपूर्ण हो गई है।

४. वे मानसिक उन्माद या मानसिक हथकण्डे और पवित्र आत्मा का वास्तविक कार्य इसके बीच का भेद नहीं समझ पा रहे हैं और इसका कारण नए नियम का अज्ञान है।

५. वे मानसिक चंगाई (सही मानसिक प्रवृत्ति से आने वाली चंगाई) और यीशु के नाम में अलौकिक चंगाई इनके बीच का भेद नहीं समझ पा रही हैं।

६. भावनात्मक उमंग और अजीब शारीरिक हावभाव प्रभु के भीतरी आनंद से ज़्यादा महत्वपूर्ण बन गए हैं।

७. सेवकों के लिए परमेश्वर के साथ उनके निकट संबंध से लोगों के बीच उनकी सेवकाई अधिक मायने रखती है। परमेश्वर की प्रशंसा से इन लोगों के लिए मनुष्यों की प्रशंसा अधिक मूल्यवान है।

८. लोग परमेश्वर के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित हैं या नहीं, इसके बजाय सभाओं में लोगों की संख्या ज्यादा महत्वपूर्ण हो गई है। स्थानीय कलीसिया बनाने के बजाय और खुद को स्थानीय कलीसिया में सेवक बनाने के बदले, अपना व्यक्तिगत राज्य, अपना आर्थिक साम्राज्य उभारना इन अगुवों के लिए अधिक महत्वपूर्ण हो गया है (यिर्मयाह ६:१३)।

यह सब कुछ प्रभु यीशु ने जो कुछ सिखाया उसके बिल्कुल उलटा है। नए नियम में प्रभु यीशु के विरुद्ध बातों को ख्रीष्ट विरोधी कहा गया है। यदि मसीही लोग इस बात को स्पष्ट रूप से नहीं समझते हैं, तो जब अपने चिन्ह और चमत्कारों से (२ थिस्सल. २:३-१०) ख्रीष्ट विरोधी संसार में उलथ पुलथ मचा देगा, तब वे उसे अंधेपन से अनुसरण करेंगे। मसीह की आत्मा की अगुवाई में चलने का अर्थ ऊपर जिस आत्मा के विषय में बताया गया है, उसके विरुद्ध आत्मा होना है। मत्ती ७:१३-२७ में यीशु ने जो वचन कहे उनका अर्थ यहां पर है (मत्ती ५-७ पढ़ें) : "अनंत जीवन का फाटक और रास्ता दोनों सकरे हैं - जैसा कि मैंने हाल ही में वर्णन किया है (मत्ती ५-७)। परंतु झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे और तुम से कहेंगे कि फाटक और रास्ता दोनों सकरे नहीं हैं, परंतु सरल और चौड़े हैं। उनसे सावधान रहो। उनके चरित्र का फल देख कर तुम उन्हें आसानी से पहचान पाओगे : क्या वे क्रोध और कामवासना से मुक्त जीवन

बिताते हैं, क्या उनमें पैसों का लोभ है, क्या वे भौतिक संपत्ति के लालच से मुक्त हैं (जैसे संसारिक लोग खोजते हैं)? क्या वे इन बातों के विरोध में प्रचार करते हैं, जैसा मैंने किया? (मत्ती ५:२१-३२ और ६:२४-३४)।

ये झूठे भविष्यद्वक्ता कई अलौकिक वरदानों का उपयोग करते हो और आश्चर्यकर्म करते हो और मेरे नाम में वास्तव में लोगों को चंगा करते हो, परंतु अंतिम दिन मैं उन सभों को नर्क में भेजूंगा, क्योंकि वे मुझे नहीं जानते थे (पवित्र के रूप में) और उन्होंने अपने निजी जीवन में पाप को नहीं त्यागा (मत्ती ७:२१-२३)। इसलिए यदि तुम चट्टान पर अपनी कलीसिया बनाना चाहते हो जो इस समय और अनंत काल में हिलेगी या गिरेगी नहीं, तो उन बातों को करने के विषय में सावधान रहें जिनके विषय मैंने तुमसे कहा है (मत्ती ५-७), और जो आज्ञा मैंने तुम्हें दी है, उसके विषय में लोगों को सिखाएं। तब मैं सदा तुम्हारे साथ रहूंगा और मेरा अधिकार हमेशा तुम्हारी सहायता करेगा (मत्ती २८-२०-१८)। परंतु मेरी बातों को यदि तुम केवल सुनोगे और उसके अनुसार नहीं चलोगे, तब जो कुछ तुम बनाओगे, वह लोगों को एक विशाल और वैभवशाली गिरजाघर या कलीसिया के समान दिखाई देगा, परंतु एक दिन वह अवश्य धराशायी हो जाएगा (मत्ती ७:२५)।"

तो हम इन अंतिम दिनों में उसकी कलीसिया कैसे बना सकते हैं?

१. हम पहाड़ी उपदेश (मत्ती ५-७) में दी गई बातों के अनुसार जीवन बिताना है और उसका निरंतर प्रचार करना है।

२. हमें नई वाचा में जीवन बिताना है, पुरानी वाचा में नहीं। इसके लिए हमें दोनों वाचाओं के बीच स्पष्ट फर्क जान लेना है (२ कुरि. ३:६)। हमें नई वाचा का प्रचार भी करना है।

आज जब प्रचारक गंभीर पापों में पड़ जाते हैं, तब वे पुराने नियम में पवित्र जनों का उदाहरण देते हैं, जो पाप में गिर गए थे। फिर कुछ समय की खामोशी के बाद वे अपनी सेवकाई फिर से आरंभ करते हैं। वे दाऊद का उदाहरण लेते हैं जिसने व्यभिचार किया था, या एलिय्याह का उल्लेख करते हैं जो हताशा में डूब गया था। और वे कहते हैं, "फिर भी परमेश्वर ने उन्हें उपयोग किया"! परंतु वे पौलुस का उदाहरण नहीं लेते जिसने अंत तक विजय और शुद्धता का जीवन बिताया। इन प्रचारकों ने और अधिकतर मसीही लोगों ने यह नहीं देखा है कि पुराने नियम के आज हमारा उदाहरण नहीं हैं। इस अनुग्रह के युग में हमें बहुत अधिक दिया गया है - और "जिसे बहुत दिया गया है, उसे बहुत मांगा भी जाएगा" (लूका १२:४८)।

प्रभु यीशु नई वाचा का मध्यस्थ है और वह हमारा उदाहरण और हमारे विश्वास का कर्ता है - दाऊद या एलिय्याह नहीं। पुराने नियम के पवित्र जन (इब्रा. ११ की सूची में सामविष्ट) और यीशु के बीच इब्रा. १२:१-४ में भेद स्पष्ट किया गया है। परंतु बहुत कम हैं जो इस सच्चाई में जीते हैं। बहुत कम लोगों ने देखा है कि परमेश्वर ने नई वाचा में "हमारे लिए पहले से एक उत्तम बात ठहराई" (इब्रा. ११:४०)। यदि हम सावधान और सचेत न रहे, तो कई प्रचारक जिस बात में चुक गए हैं, उसी तरह हममें से कोई भी गिर सकता है, क्योंकि शैतान हमारा धूर्त शत्रु है। हमारी सुरक्षा नए नियम की शिक्षा में और धर्मी नेतृत्व के अधीन रहने में है। ('धर्मी नेतृत्व' से मेरा मतलब है, जो लोगों में ऊपर दिए गए दो दुर्गुणों में से एक भी नहीं है)। यदि हम दूसरों की गलतियों से सीख सकते हैं, तो हम स्वयं उन गलतियों को करने से बच सकते हैं। इसलिए हम हमेशा प्रभु के सामने नतमस्तक रहें क्योंकि वहीं पर हमें यूहन्ना के समान ईश्वरीय प्रकटीकरण प्राप्त होगा (प्रकाशित. १:१७)।

यदि हम अपने आप को नम्र करेंगे, तो हम विजयी होने के लिए अनुग्रह प्राप्त करेंगे (१ पतरस ५:५)। और जब पवित्र आत्मा हमें परमेश्वर के वचन से सत्य प्रकट करता है और हमारे विषय में सत्य प्रगट करता है, तो हम पूरी रीति से ईमानदार हों और "सत्य से प्रेम करें" ताकि सारे पापों से "बच सकें।" इस प्रकार स्वयं परमेश्वर सब प्रकार के छल से हमारी रक्षा करेगा (२ थिस्सल. २:१०,११)। आमेन।